अन्तःदृष्टि अथवा सूझ सिद्धान्त की शैक्षणिक उपयोगिता (Educational Implications of the Theory of Insightful Learning)

शिक्षा के क्षेत्र में इस सिद्धान्त ने क्रान्तिकारी विचारों को जन्म दिया है। मोटे तौर पर निम्न बातों की प्रेरणा इस सिद्धान्त के माध्यम से प्राप्त हो सकती है-

a) जब कोई नया तथ्य बालक को सीखने के लिए कहा जाए तब उसे अपने समग्र रूप में ही बब्चो के सामने प्रस्तुत किया जाना चाहिए। फूलदार पौधे के भागों का ज्ञान कराते समय अध्यापक को प्रारम्भ में अलग-अलग भागो का ज्ञान नहीं कराना चाहिए बल्कि पौधे अथवा फूल को अपने समग्र रूप में प्रस्तुत कर उसकी सम्पूर्णता से परिचित करा कर ही भागों का अलग-अलग रूप से विश्लेषण करना चाहिए। इसी प्रकार गणित की किसी समस्या को हल करने के लिए समस्या अपने समग्र रूप मे बच्चों के सामने आ जानी चाहिए। फिर सम्पूर्ण समस्या का मनन तथा विश्लेषण करके ही उसे हल करने का प्रयोग करना चाहिए। इसी प्रकार भाषा सीखने में भी शब्दों से पहले वाक्यों और अक्षरों से पहले शब्दों. का ज्ञान कराया जाना चाहिए।

(b) पाठ्यक्रम के निर्माण तथा पाठ्यक्रम के संगठन में गैस्टाल्ट सिद्धान्त का पालन किया जाना चाहिए। किसी भी विषय को बिखरे हुए प्रकरणों अथवा तथ्यों का संग्रह मात्र ही नहीं बनाया जाना चाहिए। सारा विषय एक इकाई के समान प्रतीत हो. ऐसा प्रयत्न किया जाना चाहिए। इसी प्रकार विभिन्न विषयों तथा क्रियाओं से युक्त पाठ्यक्रम में पर्याप्त संगठन और एकता के तत्व दिखाई देने चाहिए।

(c) किसी भी कार्य को सिखाने से पहले उससे होने वाले लाभों तथा उदेश्यों का स्पष्ट ज्ञान आवश्यक है। साथ ही अभिप्रेरणाओ को पूरा-पूरा स्थान देने का प्रयत्न भी किया जाना चाहिए बालकों में सीखने की इच्छा तथा रूचि पर्याप्त मात्रा में बनी रहे. इस बात के लिए पूरे प्रयत्न करते रहने चाहिए।

(d) सूझ सिद्धान्त का सबसे बड़ा योगदान सीखने की प्रक्रिया में बौद्धिक सिधान्त को अपना उचित स्थान दिलाने को लेकर है। मनुष्य दूसरे प्राणियों की अपेक्षा अधिक सूझ-बूझ वाला प्राणी है अत: उसे ऊल-जलूल प्रयत्न करके सीखना शोभा नहीं देता। उसे अपनी मस्तिक की शक्तियों का प्रयोग करना चाहिए और इसी बात को ध्यान में रखकर अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त ने मानव को अपनी मानसिक शक्तियों का उचित उपयोग करना सिखाया ताकि वह अपनी समस्याओं का बौद्धिक हल खोज सके।

इस प्रकार रटे-रटाये ज्ञान को ग्रहण करने अथवा दूसरे के बनाये रास्ते पर चलने की अपेक्षा अपना मार्ग स्वं ढूढ़ कर ज्ञान की स्वमं खोज करने पर इस सिद्धांत ने बल दिया तो इस प्रकार के विचारों ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तनों को जन्म दिया। रटने पर जोर देने वाली अथवा मानसिक शक्तियों का प्रयोग न कर गत्यात्मक क्रियायो पर आधारित विधियों के स्थान पर आधुनिक वैज्ञानिक विधियों जैसे खोज विधि (Heauritic Method), विश्लेषण (Analytic Method), समस्या समाधान विधि (Problem Solving Method) आदि को जन्म देने का श्रेय सूझ सिद्धान्त को ही है।